मुलैठी "ग्लाइसीराइज़ा ग्लैबरा लिन"

विशेषतायें एवं लाभ:

- पौधे में ग्लिसराइजन, ग्लिसराइजिक अम्ल व ग्लिसराइटिनिक अम्ल प्रधान घटक हैं।
- इसका उपयोग सर्दी, खांसी, जुकाम, पैप्टिक अल्सर, उदर रोगों, गले के छालों, मांसपेशी की पीड़ा, गंजापन, मूत्रवाहिका की जलन दूर करने आदि में किया जाता है।

कृषि तकनीक:

मृदा:

- 100-120 से.मी. गहराई तक हल्की से दोमट मिट्टी वाली भूमि सर्वोत्तम है।

पौध रोपण:

- बिजाई हेतु भूमिगत जड़/तना जिस पर 2-3 आँख युक्त कलिका उपस्थित हो, का प्रयोग किया जाता है।
- इसके लिए 6-9 इंच की कलमों को 60 x 45 से.मी. की दूरी पर, चौथाई हिस्सा भूमि के उपर रखते हुए मिट्टी में दबा दिया जाता है।
- कलमों को फरवरी-मार्च में लगाया जाता है। परन्तु वर्षा आधारित फसल में जुलाई-अगस्त में लगाया जाता है।
- बिजाई के तुरन्त बाद खेत सींचा जाता है परन्तु पानी का ठहराव नहीं होना चाहिए।

निराई गुड़ाई:

- प्रथम वर्ष 3-4 व इसके पश्चात दो निराई-गुड़ाई की आवश्यक्ता पड़ती है।

सिंचाई:

- आरम्भ में भूमि में नमी बनाए रखना आवश्यक है, तत्पश्चात जरूरत पडने पर ही सिंचाई की जानी चाहिए।

फसल प्राप्ति व भण्डारण:

- फसल लगने के 2.5 से 3 वर्षो बाद जड़ों को सितंबर में उखाड़ा जाता है।
- 1.5 से 5 फुट तक खुदाई अथवा कल्टीवेटर की मदद से जड़ों को उखाड़ कर 15-20 से.मी. के टुकड़े करके बारी-बारी छाया व धूप में सुखाया जाता है।
- जब नमी की मात्र 50 प्रतिशत से घटकर 10 प्रतिशत रह जाए तब इसे संग्रहित कर लिया जाता है।

उपज:

- अच्छी पैदावार से 75-80 क्विंटल/हेक्टर सूखी जड़ें प्राप्त होती हैं जो बाजार में 40-50 रूपये किलो बिकती हैं।

संकलन:
डॉ. डी.के. मिश्रा
वन संवर्धन प्रभाग

निदेशक
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान
कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005